①

ज्ञान सेवा भारती सत्संग कुपौल

04-02-2010
पटना

रिपोर्ट

जैसा कि नवीन जी से बात हुई थी मैं 1 फरवरी की शाम पटना से बस द्वारा चलकर झंझारपुर गया वहां से ट्रेन द्वारा निर्मली 2 फरवरी को लगभग 11:00 बजे पहुंचा, पहुंचकर मैं शेखर सा को फोन करके केन्द्र का लोकेशन व वर्तमान समय में संचालन का समय जानना चाहा। तो पता चला कि केन्द्र 8:00 बजे सुबह से 11:00 बजे तक चलता है। शेखर सा निर्मली में उपस्थित मिल गये। उनके साथ कमलपुर 3:00 बजे शाम पहुंचा।

आस पास के लोगों से बात करने के पश्चात पता चला कि कमलपुर डगमारा इत्यादि गांवों के लोग कोशी नदी पर तटबन्ध के निर्माण के समय तटबन्ध के अन्दर के गाँवों से विस्थापित होकर आये हैं। सरकार पश्चिमी कोशी तटबन्ध के समीप के क्षेत्रों में इन लोगों को पुनर्वास कराया।

वर्ष 2008 में कोशी का पूर्वी तटबन्ध कुसहा में टूटने से नदी की धारा बदल गयी थी अतः इनके क्षेत्र में 2008 में बाढ़ की समस्या नहीं थी इनके खेती का क्षेत्रफल बाढ़ पूर्वी क्षेत्र में आने से बढ़ गया क्योंकि जलजमाव कम हो गया। नदी के पुनः अपनी धारा में आने व 2009 में कम वर्षा से अभी बाढ़ से परेशान नहीं है परन्तु जलजमाव की समस्या पुनः शुरू है। ज्ञातव्य हो कि जलजमाव वर्षा के अतिरिक्त नदी का तल तटबन्ध के भीतर उपर होने और बाहर के इनके गांवों का तल नीचा होने से स्वतः होता रहता है। चल रही सरकारी कल्याणकारी योजनायें बिचौलियों के चंगुल में हैं। जागरूकता की कमी के कारण लोगों को मिलने वाले हक नहीं मिल पाते। राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी कानून में 100 दिनों के काम की गारंटी के बावजूद किसी भी मजदूर को काम 100 दिनों का आज तक नहीं मिला है। औसत 5 से 10 दिन ही काम मिल पाया है। आंगनबाड़ी, सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) वृद्धा पेंशन विधवा पेंशन, मिडडे मिल सब जगह भ्रष्टाचार है।

(2) जागरूकता के अभाव में सूचना अधिकार कानून का भी इस्तेमाल बहुत कम होता है। यदि कोई करता भी आर्थिक दिक्कतों से परेशान हो जाता। सरकारी विद्यालय में शिक्षकों के नियोजन के बावजूद उनकी दशा बदहाल है।

ज्ञानदीप कमलपुर वार्ड न० 6

3 फरवरी को सुबह 8:00 से 9:00 बजे तक इस विद्यालय में था। इस NFE केन्द्र पर दो शिक्षक श्री गुलाम मुस्तफा और श्रीमती अन्नू देवी मिली। 24 लड़के 21 लड़कियां उपस्थित मिले अर्थात कुल 45 उपस्थित थी। यह केन्द्र एक बगीचे में चलता है एवं टूटी झोपड़ी थी एक ब्लैकबोर्ड भी था। विभिन्न उम्र वर्ग के बच्चे थे लगभग 1 से 5 तक पढ़ते होंगे। बड़े के पास पुस्तकें कापी और छोटे बच्चों के पास स्लेट, पेंसिल था। उन्होंने बताया कि यह उन्हें संस्था द्वारा मिला है। बड़े उम्र के बच्चे संख्या ज्ञान गणित के सवाल हिन्दी की पढ़ाई कर लेते थे और छोटे बच्चे अक्षर ज्ञान पहचानना, सही उच्चारण, पहाड़ा, अंग्रेजी अल्फाबेट की जानकारी थी। इनमें कुछ बच्चे नाम लिख रहे थे। इन बच्चों में अधिकांश मुस्लिम बच्चे थे ब्राह्मण व अन्य जाति के कम बच्चे थे। वहां उपस्थित एवं अभिभावक इस केन्द्र के स्थायी स्कूल जैसा चलाने की बात उठाई। यह पूछे जाने पर कि वे सरकारी स्कूल में क्यों नहीं भेजते अभिभावकों का कहना था कि वहां पढ़ाई नहीं होती और किसी दूरी पर है जिससे छोटे बच्चों को पहुंचने में दिक्कतें होती हैं। अभिभावकों से बातें करने पर इस केन्द्र में कम संख्या होने के बाद भी संतोषजनक उन्होंने बताया कि उनके बच्चे 3 घण्टा में ही सरकारी स्कूल के बच्चों से अच्छा सिखें हैं।

ज्ञानदीप हरिपुर कमलपुर वार्ड न० 12

3 फरवरी को ही 9:30 से 11:00 बजे सुबह दूसरे NFE केन्द्र पर गया। यहां शैलेन्द्र मोहन जी शिक्षक थे। 23 लड़के और 19 लड़की कुल 42 बच्चे उपस्थित मिले। इस केन्द्र पर भी विभिन्न उम्र सीमा के बच्चे मिले। बड़े बच्चे, पुस्तकों को हिन्दी माध्यम की पढ़ लेते थे छोटे बच्चों को अक्षर लिखने, पढ़ने, की जानकारी थी।

(3) ये बच्चे भी बताये कि इनको पुस्तके कापी, पेन्सिल सारा ने मिली है। यहां के शिक्षक के पढ़ाने की शैली (खासकर गणितीय गणना व अन्य मनोरंजक बातें लाइन लगाई, रहन सहन इत्यादि की जानकारियां खेल-खेल में दी जाती है) अच्छी लगी। बच्चों में पढ़ने के प्रति काफी उत्साह था।

यह केन्द्र संदीप शर्मा के दरवाजे पर खुले में चलता है। स्थानीय अधिवावक बताये की यदि झोपड़ी भी हो जाती तो धूप, वर्षा, तेज हवा से बच्चों को राहत मिलती। बातें आशा के उद्देश्यों पर करने के बाद वे श्रमदान कर बनाने के लिए तैयार थे कि इनको इसमें लगने वाली सामग्री को देना होगा। आसपास में पता लगाने पर पता चला कि पैक्स का सरकारी भवन है वह भी खाली नहीं रहता और बराबर बच्चे ट्यूशन पढ़ने आते है। हाँ थोड़े धनी लोग है अपने बच्चों को सरकारी विद्यालयों में पढ़ाने के अतिरिक्त ट्यूशन कराते है।

इस केन्द्र के आसपास गरीब मजदूर है इनके निवास सघन बस्तियों के रूप में है इनको भी पुनर्वासित कर स्थिरिक जमीन रहने के लिए सरकार द्वारा दी गयी थी। पौधा बढ़ने के साथ घनी आबादी में बदलगये है। खेती कोशी में जाने के बाद ये लोग गरीब व मजदूर ही है। इनको भी नरेगा व अन्य योजनाओं का लाभ नहीं मिल पाता। दोपहर में यहां काम मांगने का आवेदन भी बनवाया। यहां पढ़ने वाले बच्चे अत्यन्त पिछड़ा वर्ग के थे इसमें शर्मा (खतवा), मेहता, साहू इत्यादि जाति के थे। पता चला कि केन्द्र की एक शिक्षिका विमार है इसी कारण उपस्थित नहीं हुई है।

शिक्षक व शिक्षिकाये बतायी की उनका मानदेय मिल जाता है। पैरेन्ट्स मिटिंग के बावजूद जागरूकता की कमी चकित करता है। राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी कानून (नरेगा) सूचना अधिकार, PDS, ICDS, इत्यादि कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी जागरूकता बैठकों में देने की आवश्यकता है। साथ ही आशा के सम्बन्ध में जानकारी पर शिक्षण का प्रशिक्षण अध्यापकों को कराने की जरूरत है।

(महेन्द्र यादव)
आशा (पटना बिहार)